डॉ० संगीता राय
अतिथि शिक्षक
संस्कृत विभाग
एच० डी० जैन कॉलेज, आरा।

भाषाओं का वर्गीकरण

1) अश्लिष्ट योगात्मक भाषाएँ :—
इस वर्ग की भाषाओं में प्रत्यय (सम्बन्ध तत्व या रूप तत्व) एवं प्रकृति (अर्थ तत्व) परस्पर युक्त (श्लिष्ट) होते हुए भी स्पष्ट रूप से तिलतण्डुल न्याय से पृथक् दृष्टिगोचर होते हैं। अतः ऐसी भाषा अश्लिष्ट योगात्मक कहलाती है।
अश्लिष्ट - योगात्मक भाषाओं के वाक्यों में प्रत्ययों की प्रधानता होती है। बन्तु, पूराल, अल्ताई, द्रविड़ तथा मुण्डा आदि परिवारों की भाषाएँ इसी वर्ग में आती हैं। 'तुर्की' इस वर्ग की प्रतिनिधि भाषा है।

इन भाषाओं में प्रकृति प्रत्यय का योग विभिन्न प्रकार से होता है। कभी प्रत्यय प्रकृति से पूर्व जुड़ता है, कभी प्रकृति के मध्य में अथवा कभी प्रकृति के अन्त में जुड़ता है। अतः प्रत्यय प्रधान अश्लिष्ट भाषाओं को चार वर्गों में विभक्त किया गया है।

i) पुरः प्रत्ययप्रधान या पूर्वयोगात्मक → इन भाषाओं में प्रत्यय के स्थान पर उपसर्गों का प्रयोग होता है। तथा ये प्रत्यय = उपसर्ग, प्रकृति से पूर्व में जुड़ते हैं।
⇒ इसके अन्तर्गत 'बान्तू' परिवार की 'काफिरी' व जूलू भाषाएँ आती हैं।

ii) मध्य प्रत्यय प्रधान / मध्ययोगात्मक — इसमें प्रत्यय की योजना मध्य में की जाती है। मुण्डा परिवार की संथाली

भाषा इसी परिवार में आती है।

iii) पर प्रत्यय प्रधान या ~~मध्ययोगात्मक~~ अन्तयोगात्मक - इन भाषाओं में प्रत्यय प्रकृति के बाद जुड़ता है। इस वर्ग की भाषाओं में 'यूराल', अल्ताई तथा द्रविण भाषा परिवार आते हैं। अल्ताई परिवार की तुर्की भाषा अन्तयोगात्मक है।

भारतीय दक्षिण भाषाओं में कन्नड़ एवं मलयालम आदि में अन्तयोगात्मक दृष्टिगोचर होती है।

iv) पूर्वान्त योगात्मक या आंशिक योगात्मक — इसको सर्व प्रत्यय प्रधान भाषा भी कहा जाता है। इन भाषाओं में प्रकृति (अर्थ तत्व) के पूर्व एवं पश्चात दोनों ओर प्रत्यय जोड़े जाते हैं। इसमें प्रशान्तमहासागर की 'पपुआई परिवार' की भाषाएँ आती हैं। 'न्यूगिनी द्वीप की 'मफीर' एवं 'मलयशाखा' की भाषाएँ इसके उदाहरण हैं।

2) प्रश्लिष्ट योगात्मक या समास प्रधान भाषाएँ → 'प्रकर्षेण श्लिष्टः' प्रश्लिष्टः अर्थात प्रकर्षता के साथ चिपका हुआ। प्रश्लिष्ट योगात्मक भाषाओं में प्रकृति प्रत्यय इस प्रकार से जुड़े रहते हैं कि उन्हें पृथक् करना असम्भव सा लगता है। उन्हें समास प्रधान भाषाएँ कहा जाता है। इन भाषाओं में शब्द रूपों में 'अर्थतत्व' तथा 'रूपतत्व' की पृथक्-2 रूप में कल्पना करना तक कठिन होता है उन्हें पृथक् रूप से बिल्कुल नहीं जाना जा सकता है। इसके साथ इनमें अनेकानेक अर्थ तत्वों का थोड़ा-थोड़ा अंश कटकर एकशब्द बन जाती है। यह शब्द एक शब्द का अर्थ न बताकर पूरे वाक्य का अर्थ बताता है। ग्रीनलैण्ड तथा दक्षिण अमरीका की भाषाएँ इस प्रकार की हैं। 'चेराकी' नामक भाषा भी इसी का उदाहरण है।

संस्कृत भाषा यद्यपि प्रधानतः श्लिष्ट योगात्मक है, किन्तु उसमें प्रश्लिष्ट योगात्मकता के लक्षण दृष्टिगोचर होते हैं —

यथा - 'तैरभिप्रेतार्थसाधनेऽभिनवकौशलप्रदर्शनं कृतमसि' अर्थात् - उन्होंने अपना अभिप्राय सिद्ध करने में नूतन कुशलता दिखाई।

→ अंग्रेजी में भी प्रश्लिष्टता दृष्टव्य है - United Nations Economical, Social & Cultural Organization = UNESCO

सम्बन्ध तत्व तथा अर्थतत्व की दृष्टि से प्रश्लिष्ट योगात्मक के दो विभाग होते हैं -

i) पूर्ण प्रश्लिष्ट

ii) आंशिक प्रश्लिष्ट

—x—